पौधे की गाथा

बीजों के बंद बिछौने में
एक नन्हा पौधा सोता है
कैसे बतलायें बाहर से-
वो हंसता है कि रोता है!

जब सूरज ताप तपाता है,
जब पानी दुबक के आता है,
और मिट्टी प्यार से झिड़की दे-
'ऐसे भला कोई सोता है?'

तब नन्हा पौधा जागता है
बीज तोड़कर झांकता है
हरी-भरी वर्दी पहने वो
हम सबकी साँसें ढोता है!

वह पौधा है सो फूलेगा
फूलेगा फिर फल देगा
कभी किसी ने दिया नहीं,
जितना वो सबको देता है!

कैसे बतलायें बाहर से-
वो हंसता है कि रोता है!

(आशुतोष उपाध्याय)